St. Aloysius College (Autonomous), Jabalpur

Reaccredited 'A+' by NAAC (CGPA – 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence by UGC

DST FIST Supported



Department of Economics

Syllabus

B.A./B.Sc. III & IV Semester

Session: 2023-24

B.A/B.Sc. – III Semester

$\underline{(Paper-Major/Minor)}$

Course Title पाठ्यक्रम का शीर्षक	Macro Economics (समिष्टि अर्थशास्त्र)
Course Type	Major/Minor
पाठ्यक्रम का प्रकार	
Credit Value	06
क्रेडिट मान	
Max. Marks	100
अधिकतम अंक	

Unit (इकाई)	Topics (विषयवस्तु)
Unit 1- Concept of Macro Economics समिष्टि अर्थशास्त्र की अवधारणा	1. Definition of Macro Economics, Subject Matter, Importance and Limitations 2. Interrelationship between Micro and Macro Economics. 3. Macro Economics Variables- Stock and Flow. 4. Circular Flow of Income 5. Definition and Different Concepts of National Income 6. Methods of Measuring National Income 7. Social Accounting of National Income 8. National Income and Economic Welfare 9. Ancient Indian Concept of Income, Debt and Charity. (Market Failure and Charity) - Rig Ved-117 Hymn, Bhsim Parv of Mahabharata (Book/Vol -VI) 1. सिमिष्टि अर्थशास्त्र की परिभाषा, विषयवस्तु महत्व एवं सीमाए 2. सिमिष्टि और व्यष्टि अर्थशास्त्र में अंतर्संबंध 3. सिमिष्टि आर्थिक चर -स्टॉक और प्रवाह 4. आय का चक्रीय प्रवाह 5. राष्ट्रीय आय की परिभाषा एवं विभिन्न अवधारणाए 6. राष्ट्रीय आय को मापने की विधिया 7.राष्ट्रीय आय एवं आर्थिक कल्याण 9.आय,ऋण और दान की प्राचीन भारतीय अवधारणा (बाजार की विफलताए और दान) ऋगवेद ऋचा-117,महाभारत का भीष्म पर्व (पुस्तक /खण्ड-VI)

Unit -2 Determination of Employment रोजगार का निर्धारण:	 Classical Theory of Employment- Say's Market Law, Wage Price Flexibility. Keynes' Employment Theory- Aggregate Demand Function, Aggregate Supply Function and Effective Demand. Applicability of Keynes' Employment Theory in Developing Countries. Psychological Law of Consumption. Consumption Function- Marginal Propensity to consume, Average Propensity to Consume, Marginal Propensity to Save and Average Propensity to Save. Principle of Multiplier. Accelerator Principle रोजगार का प्रतिष्टित सिद्धांत- 'से' का बाजार नियम, मजदूरी कीमत नम्यता 2.कीन्स का रोजगार सिद्धांत- समग्र मांग फलन, समग्र पूर्ति फलन,प्रभावपूर्ण मांग विकासशील देशो में कीन्स के रोजगार सिद्धांत की व्यावहारिकता उपभोग का मनोवैज्ञानिक नियम
	5.उपभोग फलन – सीमांत उपभोग प्रवृत्ति, औसत उपभोग, सीमांत बचत प्रवृत्ति, औसत बचत प्रवृत्ति 6.गुणक सिद्धांत
	7.त्वरक सिद्धांत
Unit -3 Investment विनियोग:	 Investment – Meaning, Types and Motivation. Marginal Efficiency of Capital (MEC). Marginal Efficiency of Investment (MEI). Keynes's Liquidity Preference Theory Determination of Equilibrium IS Curve in Real Sector and Equilibrium LM Curve in Monetary sector-IS-LM Model. Monetary Policy- Meaning, Tools and Effectiveness. Fiscal Policy- Meaning, Tools and Effectiveness. विनियोग- अर्थ , प्रकार एवं प्रेरणा
	2. पूंजी की सीमांत क्षमता (MEC)
	3. विनियोग की सीमांत क्षमता (MEI)
	4. कीन्स का तरलता पसंदगी सिद्धांत
	5. वास्तविक क्षेत्र में साम्य आई एस वक्र (IS CURVE) एवं मौद्रिक क्षेत्र में साम्य एल एम
	(LM) वक्र का निर्धारण-आई एस - एल एम (ISLM) मॉडल
	6. मौद्रिक नीति - अर्थ, उपकरण एवं प्रभावशीलता
	7. राजकोषीय नीति - अर्थ ,उपकरण एवं प्रभावशीलता

Unit -4 Inflation and Deflation मुद्रास्फीति ,अवस्फीति	 Meaning of Inflation, Deflation and Stagflation. Types and Effects of Inflation. Principles of Inflation- Demand pull Inflation and Cost Push Inflation. Measures to control Inflation. Effects of Deflation and Measure to control Deflation. Philips Curve. Measurements of Inflation in India-Wholesale Price Index (WPI), Consumer Price Index (CPI), GDP deflator मुद्रास्फीति ,अवस्फीति ,स्फितिजनित मंदी (Stagflation) का अर्थ
	2.मुद्रास्फीति के प्रकार एवं प्रभाव
	3.मुद्रास्फीति के सिद्धांत- मांग प्रेरित स्फीति एवं लागत प्रेरित स्फीति
	4.मुद्रास्फीति को नियंत्रण करने के उपाय
	5.अवस्फीति के प्रभाव एवं नियंत्रण करने के उपाय
	6.फिलिप्स वक्र
	7.भारत में मुद्रास्फीति का मापन – थोक मूल्य सूचकांक (WPI), उपभोक्ता मूल्य
	सूचकांक (CPI) जी डी पी डफ्लेक्टर
Unit -5 Trade Cycle व्यापार चक्र	1. Meaning and Phases of Trade cycle 2. Theories of Trade Cycle 3. Schumpeter's Innovation Theory 4. Keynesian Theory. 5. Kaldor's Theory 6. Samuelson's Theory 7. Hicksian Theory 8. Measures to control Trade Cycle 1. व्यापार चक्र का अर्थ और अवस्थाए 2. मौद्रिक सिद्धांत 3. शुम्पीटर का नवप्रवर्तन सिद्धांत 4. कीन्स का सिद्धांत 5. कॉल्डोर का सिद्धांत 6. सैमुल्सन का सिद्धांत 7. हिक्स का सिद्धांत
	8. व्यापार चक्र को नियंत्रित करने के उपाय

B.A/B.Sc. – III Semester (Paper – Elective)

Course Title पाठ्यक्रम का शीर्षक	Macro Economics (समिष्टि अर्थशास्त्र)
Course Type	Elective
पाठ्यक्रम का प्रकार	
Credit Value	04
क्रेडिट मान	
Max. Marks	100
अधिकतम अंक	

Unit (इकाई)	Topics (विषयवस्तु)
Unit 1- Concept of Macro Economics समिष्टि अर्थशास्त्र की अवधारणा	 Definition of Macro Economics, Subject Matter, Importance and Limitations Interrelationship between Micro and Macro Economics. Macro Economics Variables- Stock and Flow. Circular Flow of Income Definition and Different Concepts of National Income Methods of Measuring National Income Social Accounting of National Income National Income and Economic Welfare Ancient Indian Concept of Income, Debt and Charity. (Market Failure and Charity) - Rig Ved-117 Hymn, Bhsim Parv of Mahabharata (Book/Vol -VI) सिमिष्टि और व्यष्टि अर्थशास्त्र में अंतर्संबंध सिमिष्टि और व्यष्टि अर्थशास्त्र में अंतर्संबंध सिमिष्टि आर्थिक चर -स्टॉक और प्रवाह राष्ट्रीय आय को परिभाषा एवं विभिन्न अवधारणाए राष्ट्रीय आय को मापने की विधिया राष्ट्रीय आय को सामाजिक लेखांकन राष्ट्रीय आय एवं आर्थिक कल्याण आय,ऋण और दान की प्राचीन भारतीय अवधारणा (बाजार की विफलताए और दान) ऋगवेद ऋचा-117,महाभारत का भीष्म पर्व (पुस्तक /खण्ड-VI)

Unit 2 Determination of	1 Classical Theory of Franciscope Cov. M. dest I W
Unit -2 Determination of Employment	1. Classical Theory of Employment- Say's Market Law, Wage Price Flexibility.
रोजगार का निर्धारण:	 Keynes' Employment Theory- Aggregate Demand Function, Aggregate Supply Function and Effective Demand. Applicability of Keynes' Employment Theory in Developing Countries. Psychological Law of Consumption. Consumption Function- Marginal Propensity to consume, Average Propensity to Consume, Marginal Propensity to Save and Average Propensity to Save. Principle of Multiplier. Accelerator Principle रोजगार का प्रतिष्टित सिद्धांत- 'से' का बाजार नियम, मजदूरी कीमत नम्यता कीन्स का रोजगार सिद्धांत- समग्र मांग फलन, समग्र पूर्ति फलन,प्रभावपूर्ण मांग
	3.विकासशील देशो में कीन्स के रोजगार सिद्धांत की व्यावहारिकता
	4.उपभोग का मनोवैज्ञानिक नियम
	5.उपभोग फलन – सीमांत उपभोग प्रवृत्ति, औसत उपभोग, सीमांत बचत प्रवृत्ति, औसत बचत प्रवृत्ति 6.गुणक सिद्धांत
	7.त्वरक सिद्धांत
Unit -3 Investment विनियोग:	 Investment – Meaning, Types and Motivation. Marginal Efficiency of Capital (MEC). Marginal Efficiency of Investment (MEI). Keynes's Liquidity Preference Theory Determination of Equilibrium IS Curve in Real Sector and Equilibrium LM Curve in Monetary sector-IS-LM Model. Monetary Policy- Meaning, Tools and Effectiveness. Fiscal Policy- Meaning, Tools and Effectiveness. विनियोग- अर्थ , प्रकार एवं प्रेरणा
	2. पूंजी की सीमांत क्षमता (MEC)
	3. विनियोग की सीमांत क्षमता (MEI)
	4. कीन्स का तरलता पसंदगी सिद्धांत
	5. वास्तविक क्षेत्र में साम्य आई एस वक्र (IS CURVE) एवं मौद्रिक क्षेत्र में साम्य
	एल एम (LM) वक्र का निर्धारण-आई एस - एल एम (ISLM) मॉडल
	6. मौद्रिक नीति - अर्थ, उपकरण एवं प्रभावशीलता
	7. राजकोषीय नीति - अर्थ ,उपकरण एवं प्रभावशीलता
Unit -4 Inflation and Deflation मुद्रास्फीति ,अवस्फीति	 Meaning of Inflation, Deflation and Stagflation. Types and Effects of Inflation. Principles of Inflation- Demand pull Inflation and Cost Push Inflation. Measures to control Inflation. Effects of Deflation and Measure to control Deflation. Philips Curve.

- 7. Measurements of Inflation in India-Wholesale Price Index (WPI), Consumer Price Index (CPI), GDP deflator
- 1.मुद्रास्फीति ,अवस्फीति ,स्फितिजनित मंदी (Stagflation) का अर्थ
- 2.मुद्रास्फीति के प्रकार एवं प्रभाव
- 3.मुद्रास्फीति के सिद्धांत- मांग प्रेरित स्फीति एवं लागत प्रेरित स्फीति
- 4.मुद्रास्फीति को नियंत्रण करने के उपाय
- 5.अवस्फीति के प्रभाव एवं नियंत्रण करने के उपाय
- 6.फिलिप्स वक्र
- 7.भारत में मुद्रास्फीति का मापन थोक मूल्य सूचकांक (WPI), उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) जी डी पी डफ्लेक्टर

B.A/B.Sc. – IV Semester

(Paper – Major/Minor)

Course Title पाठ्यक्रम का शीर्षक	Money, Banking and Public Finance (मुद्रा, बैंकिंग तथा लोकवित्त)
Course Type	Major/ Minor
पाठ्यक्रम का प्रकार	
Credit Value	06
क्रेडिट मान	
Max. Marks	100
अधिकतम अंक	

Unit (इकाई)	Topics (विषयवस्तु)
Unit 1	Money: 1. Money- Definition, Functions and Classification 2. Importance of Money 3. Value of Money and Quantitative Theory of Money- Cash Transaction Approach, Cash Balance Approach and Keynesian Approach 4. Quantity Theory of Milton Friedman 5. Main Components of Money Supply, High Powered Money, Concept of Money Multiplier, Factors Affecting Money Supply, Plastic Money 1. मुद्रा ,परिभाषा -कार्य एवं वर्गीकरण 2. मुद्रा का महत्त्व 3. मुद्रा का महत्त्व 3. मुद्रा का मूल्य एवं मुद्रा का परिमाण सिद्धांत नकद लेनदेन दृष्टिकोण ,नकद शेष दृष्टिकोण एवं कीन्स का दृष्टिकोण 4. मिल्टन फ्रीडमैन का परिमाण सिद्धांतस 5. मुद्रा पूर्ति के मुख्य घटक, उच्च शक्ति मुद्रा, मुद्रा गुणक की अवधारणा, मुद्रा पूर्ति को प्रभावित करने वाले तत्व, प्लास्टिक मुद्रा
Unit -2	Banking: 1. Bank – Definition and Types 2. Functions of Commercial Banks 3. Process of Credit Creation by Commercial Banks 4. Introduction of Internet Banking and Retail Banking 5. Meaning and Importance of Central Bank 6. Functions of Central Bank 7. Credit Control by Central Bank- Quantitative and Qualitative Methods 1. बैंक- परिभाषा एवं प्रकार

2. व्यापारिक बैंको के कार्य 3. व्यापारिक बैंको द्वारा साख निर्माण की प्रक्रिया 4. इन्टरनेट बैंकिंग एवं खुदरा बैंकिंग का परिचय 5. केन्द्रीय बैंक का अर्थ एवं महत्त्व 6 केन्दीय बैंक के कार्य 7. केन्द्रीय बैंक द्वारा साख नियन्त्रण- गुणात्मक एवं परिमाणात्मक विधियां Unit -3 **Introduction of Public Finance:** 1. Public Finance- Meaning, Nature and Scope 2. Distinction between Private and Public Finance 3. Public Goods, Private Goods and Merit Goods 4. Market Failures and Role of State 5. Principle of Maximum Social Advantage 6. Public Expenditure- Meaning and Classification 7. Principle of Public Expenditure- Wagner's Hypothesis, Peacock and Wiseman Approach 8. Causes and Effects of Increasing Public Expenditure 9. Public Expenditure in India लोक वित्त का परिचय : 1. लोक वित्त - अर्थ, प्रकृति एवं क्षेत्र 2. लोक वित्त एवं निजी वित्त में अंतर 3. सार्वजनिक वस्तुएं, निजी वस्तुएं एवं उत्कृष्ट वस्तुएं 4. बाज़ार की असफलता एवं राज्य की भूमिका 5. अधिकतम सामाजिक लाभ का सिधांत 6. सार्वजानिक व्यय का का अर्थ एवं वर्गीकरण 7. सार्वजानिक व्यय के सिधांत- वेगनर की परिकल्पना, पिकॉक एवं वाइजमैन की अवधारणा 8. बढ़ते सार्वजनिक व्यय के कारण एवं प्रभाव 9. भारत में सार्वजानिक व्यय

Unit -4	
Omt 7	Public Revenue:
	1. Sources of Public Revenue
	2. Taxation- Meaning, Classification and Canons of Taxation
	3. Incidence and Shifting of Taxation
	4. GST- An Introduction
	5. Taxable Capacity in India6. Effects of Taxation
	7. Characteristics of India Tax Structure
	8. Prices and Taxes, Shanti Parv of - Book XII of Mahabharat
	9.Concept of Public Goods and Taxes as per Kautilya
	सार्वजनिक आय :
	1. सार्वजानिक आय के स्त्रोत
	2. कराधान –अर्थ , वर्गीकरण और करारोपण के सिधांत
	3. करापात एवं कर विवर्तन
	4. वस्तु एवं सेवा कर (GST) का सामान्य परिचय
	5. भारत में करदान छमता
	6. करारोपण के प्रभाव
	7. भारतीय कर ढांचे की विशेषताएँ
	8. मूल्य और कर- शांति पर्व -पुस्तक XII महाभारत
	9. कौटिल्य के अनुसार सार्वजानिक वस्तुओं और करों की अवधारणा
Unit -5	Public Debt and Financial Administration:
	Public Debt- Meaning Type and Sources
	2. Effects of Public Debt
	3. Methods of Public Debt Redemption
	4. Public Debt in India5. Deficit Financing
	6. Federal Finance in India
	7. Recommendation of Latest Finance Commission in India
	8. Latest Budget of Centre and State
	9. Grasp of Economics Policies of Statehood: Sabha Parv of Book II of
	Mahabharat सार्वजानिक ऋण एवं वित्तीय प्रशासन
	तावजानिक ऋण – अर्थ , प्रकार एवं स्त्रोत
	2. सार्वजानिक ऋण के प्रभाव
	3. सार्वजानिक ऋण शोधन की विधियाँ
	. तात्रभाषामः वद्य तावप मगाभावभा

- 4. भारत में सार्वजानिक ऋण
- 5. घाटे की वित्त व्यवस्था
- 6. भारत में संघीय वित्त
- 7. नवीनतम वित्त आयोग की अनुशंशाऐ
- 8. केंद्र एवं राज्य के नवीन बजट
- 9. राज्य की आर्थिक नीतियों की समझ- महाभारत पुस्तक II का सभा पर्वI

B.A/B.Sc. – IV Semester

(Paper – Elective)

Course Title पाठ्यक्रम का शीर्षक	Money, Banking and Public Finance (मुद्रा, बैंकिंग तथा लोकवित्त)
Course Type	Major/Minor
पाठ्यक्रम का प्रकार	
Credit Value	04
क्रेडिट मान	
Max. Marks	100
अधिकतम अंक	

Unit (इकाई)	Topics (विषयवस्तु)
Unit 1	Money: 6. Money- Definition, Functions and Classification 7. Importance of Money 8. Value of Money and Quantitative Theory of Money- Cash Transaction Approach, Cash Balance Approach and Keynesian Approach 9. Quantity Theory of Milton Friedman 10. Main Components of Money Supply, High Powered Money, Concept of Money Multiplier, Factors Affecting Money Supply, Plastic Money 6. मुद्रा ,परिभाषा -कार्य एवं वर्गीकरण 7. मुद्रा का महत्त्व 8. मुद्रा का मृल्य एवं मुद्रा का परिमाण सिद्धांत:- नकद लेनदेन दृष्टिकोण ,नकद शेष दृष्टिकोण एवं कीन्स का दृष्टिकोण 9. मिल्टन फ्रीडमैन का परिमाण सिद्धांतस
	10. मुद्रा पूर्ति के मुख्य घटक, उच्च शक्ति मुद्रा, मुद्रा गुणक की अवधारणा, मुद्रा पूर्ति को प्रभावित करने वाले तत्व, प्लास्टिक मुद्रा
Unit -2	 Banking: 8. Bank – Definition and Types 9. Functions of Commercial Banks 10. Process of Credit Creation by Commercial Banks 11. Introduction of Internet Banking and Retail Banking 12. Meaning and Importance of Central Bank 13. Functions of Central Bank 14. Credit Control by Central Bank- Quantitative and Qualitative Methods

	1. बैंक- परिभाषा एवं प्रकार
	2. व्यापारिक बैंको के कार्य
	3. व्यापारिक बैंको द्वारा साख निर्माण की प्रक्रिया
	4. इन्टरनेट बैंकिंग एवं खुदरा बैंकिंग का परिचय
	5. केन्द्रीय बैंक का अर्थ एवं महत्त्व
	6. केन्द्रीय बैंक के कार्य
	7. केन्द्रीय बैंक द्वारा साख नियन्त्रण- गुणात्मक एवं परिमाणात्मक विधियां
Unit -3	Introduction of Public Finance: 10. Public Finance- Meaning, Nature and Scope 11. Distinction between Private and Public Finance 12. Public Goods, Private Goods and Merit Goods 13. Market Failures and Role of State 14. Principle of Maximum Social Advantage 15. Public Expenditure- Meaning and Classification 16. Principle of Public Expenditure- Wagner's Hypothesis, Peacock and Wiseman Approach 17. Causes and Effects of Increasing Public Expenditure 18. Public Expenditure in India लोक वित्त न अर्थ, प्रकृति एवं क्षेत्र 2. लोक वित्त एवं निजी वित्त में अंतर 3. सार्वजनिक वस्तुएं, निजी वस्तुएं एवं उत्कृष्ट वस्तुएं 4. बाज़ार की असफलता एवं राज्य की भूमिका 5. अधिकतम सामाजिक लाभ का सिधांत 6. सार्वजानिक व्यय का का अर्थ एवं वर्गीकरण 7. सार्वजानिक व्यय के सिधांत- वेगनर की परिकल्पना, पिकॉक एवं वाइजमैन की अवधारणा
	8. बढ़ते सार्वजिनक व्यय के कारण एवं प्रभाव9. भारत में सार्वजानिक व्यय

Unit -4

Public Revenue:

- 1. Sources of Public Revenue
- 2. Taxation- Meaning, Classification and Canons of Taxation
- 3. Incidence and Shifting of Taxation
- 4. GST- An Introduction
- 5. Taxable Capacity in India
- 6. Effects of Taxation
- 7. Characteristics of India Tax Structure
- 8. Prices and Taxes, Shanti Parv of Book XII of Mahabharat
- 9. Concept of Public Goods and Taxes as per Kautilya

सार्वजनिक आय:

- 1. सार्वजानिक आय के स्त्रोत
- 2. कराधान –अर्थ , वर्गीकरण और करारोपण के सिधांत
- 3. करापात एवं कर विवर्तन
- 4. वस्तु एवं सेवा कर (GST) का सामान्य परिचय
- 5. भारत में करदान छमता
- 6. करारोपण के प्रभाव
- 7. भारतीय कर ढांचे की विशेषताएँ
- 8. मूल्य और कर- शांति पर्व -पुस्तक XII महाभारत
- 9. कौटिल्य के अनुसार सार्वजानिक वस्तुओं और करों की अवधारणा